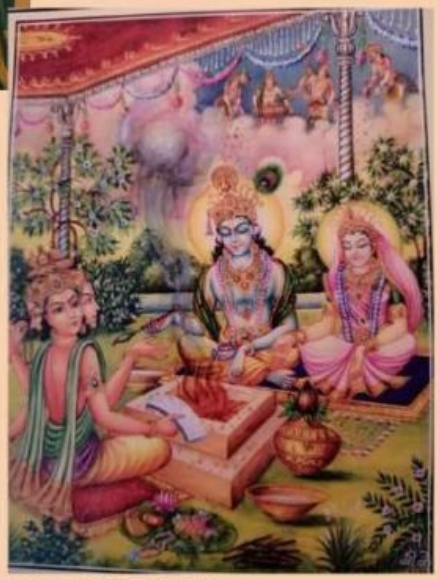

परम पूज्या नानीजी
निकुँज प्रवेश उत्सव - 2024

।।श्रीराधा।।

मम्मी का जन्म उत्तर प्रदेश स्थित मेरठ शहर में २ अक्टूबर १९२६ को हुआ था। उनके पिता श्री जगमोहन लाल करौली एक विख्यात डाक्टर थे। वे अपनी सज्जनता, दयालुता व कर्तव्य परायणता के कारण अत्यन्त लोक प्रिय डाक्टर माने जाते थे। उनकी माता जी श्रीमती जय रानी करौली एक सरल, उदार, पातिव्रत धर्म परायण एवम् भक्ति से ओत-प्रोत हृदय की महिला थीं। मम्मी के जन्म के पश्चात ही हमारे नानाजी अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी प्रकार प्रतिष्ठित हुये थे इस कारण उन्होंने मम्मी का नाम शान्ति रखा था। हमारी नानीजी के प्रेमिल व्यवहार एवम् दक्षता से परिपूर्ण गृह संचालन के कारण घर सगे सम्बन्धियों से भरा रहता था। मम्मी का लालन-पालन सौहार्द, सम्पन्नता व खुशहाली के वातावरण में हुआ था। उनका विद्यार्थी जीवन रघुनाथ गर्ल्स इन्टर कालेज मेरठ में बीता। पढ़ाई से सरोकार उनका कम रहता था, हिन्दी व होम साइंस उनके प्रिय विषय थे। विद्यालय की अन्य गतिविधियों में वे अग्रगण्य रहती थीं। Athletics, badminton, throwball, basketball आदि खेलो में उनकी विशेष रुचि थी। Girl Guide संग की वे प्रतिष्ठित सदस्या थीं। अपने हँसमुख व चुलबुले स्वभाव के कारण सहपाठियों व अध्यापिकाओं की प्रिय बनी रहती थीं। एक बार दिवाली के अवसर पर अध्यापिका की कुर्सी के नीचे पटाखे रखने के कारण प्रिंसिपल ऑफिस की हवा खानी पड़ी थी तथा दण्ड भी भुगतना पड़ा था। गृह सज्जा एवं पाकशाला में नवीन व्यंजन बनाना उनको बहुत प्रिय थे। नए-नए डिजाइन व फैशन के कपड़े पहनना उनको बहुत भाते थे। मशीन पर वस्त्रों की सिलाई में वे बहुत निपुण थी।

उस समय बालिकाओं को अधिक पढ़ाने का चलन नहीं था अतः मम्मी की पढ़ाई इंटर अर्थात बारहवीं कक्षा तक ही रही। जब मम्मी की आयु १८ वर्ष की हुई तो नानाजी एवं नानीजी को उनके विवाह की चिंता होने लगी। मेरठ कॉलेज के एक जलसे में हमारे नाना जी की दृष्टि डैडी पर पड़ी और उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि डैडी एक वर्ष से कॉलेज में पढ़ा रहे थे तथा आगरा यूनिवर्सिटी के बी एस सी एवम् एम एस सी की परीक्षाओं में उन्होंने टॉप भी किया था तथा उन सब व्यक्तियों ने डैडी की भूरि-भूरि प्रशंसा भी करी। एक और जानकारी हमारे नाना जी को यह प्राप्त हुई कि कुछ दिवस पूर्व डैडी ने पीसीएस की परीक्षा में टॉप किया था। संभवतः हमारे नाना जी ने उसी समय यह निश्चय कर लिया था कि उनकी छोटी बेटी शांति के लिए यही सुयोग्य वर रहेगा। एक-एक करके विवाह के प्रारंभिक चरण संपन्न हुए और २९ अप्रैल १९४५ को १९ वर्ष की आयु में मम्मी का विवाह हो गया। डैडी की आयु लगभग २३ वर्ष की थी तथा वे उन्नाव ज़िले में डिप्टी कलेक्टर के पद पर आसीन थे।

सजनी री गावौ मंगलवार।
चिरजीवौ वृषभानु नंदिनी दुल्हे नंदकुमार।।
मोहन के सिर मुकुट बिराजत राधा के उर हार।
नीलांबर पीतांबर की छबि सोभा अमित अपार।।
मंडप छायौ देखि बरसाने बैठे नंद उदार।
भामर लेत प्रिया और प्रीतम तन मन दीजे बार।।
यह जोरी अविचल वृंदावन क्रीडत करत विहार।
'परमानंद' मनोरथ पूरन भगतन प्रान आधार।।

विवाह उपरांत मम्मी ने अपनी माताजी की पातिव्रतधर्म व गृहस्थ धर्म की शिक्षा को पूर्ण रूपेण अपने जीवन में उतारा तथा एक उत्तम पत्नी बनने का श्रेय प्राप्त किया। डैडी की अनेक प्रतिभाओं व शांत एवं हंसमुख स्वभाव के कारण मम्मी उनसे बहुत प्रभावित हुई तथा वैवाहिक जीवन के आरंभ से उनका डैडी के प्रति जो समर्पण हुआ वह उनके जीवन के अंतिम क्षण तक रहा। वैवाहिक जीवन की चुनौतियां भी अनेक थीं जिनका सामना उन्होंने बड़े धैर्य व प्रसन्नता से किया।

अपने नवीन गृह में मम्मी को अपने सास व ससुर जी से अत्यंत स्नेह व सौहार्द का व्यवहार प्राप्त हुआ जिसके कारण वह अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानती थीं। हमारी दादी एक बहुत सुलझी हुई महिला थीं व हर प्रकार से मम्मी को सहयोग देती थीं। डैडी की सीमित आय में वे बड़ी दक्षता से गृह संचालन करती थीं, जिससे मम्मी को बहुत कुछ सीखने को मिला। विवाह उपरान्त जब महीने के आरंभ में डैडी को अपना पे-चेक मिला तो मम्मी के समक्ष उन्होंने अत्यन्त उल्लास के साथ उसको प्रस्तुत किया। इस पर उनका भोला-भाला प्रश्न था, कि क्या वे ऐसे ही प्रतिदिन लाकर देंगे क्योंकि उन्होंने अपने पिताजी को प्रतिदिन लाते देखा था। डैडी ने पूर्ण धैर्य के साथ उनको समझाया कि सरकारी नौकरी में केवल माह के आरंभ में ही वेतन प्राप्त होता है। यद्यपि मम्मी का लालन पालन सम्पन्नता की गोद में हुआ था किन्तु डैडी की सीमित आय में ही गृह संचालन करना तथा प्रसन्न रहना यह उन्होंने आरम्भ से ही अपने अंतस में उतार लिया था। हमारे ताऊजी के दो पुत्र एवं पुत्री, बाबा जी, दादी जी, डैडी के साथ रहते थे क्योंकि कुछ माह पूर्व हमारी ताई जी का देहान्त हो गया था। मम्मी को बच्चों का बहुत शौक था, अत: वह अपने अवकाश के समय को उन तीनों के साथ व्यतीत करती एवं उनके साथ खेलती। उनकी पूरी देखभाल करती। यह स्नेह संबंध मम्मी का उन तीनों के साथ आजीवन बना रहा।

हमारे बाबा जी एक अत्यंत शीलवान, सदाचारी व सौहार्द पूर्ण हृदय के व्यक्ति थे। मम्मी एक सनातन धर्म आवलंबी परिवार से थीं, जहां पूजा, रामायण पाठ, कीर्तन व कथा इत्यादि होते ही रहते थे। अपने नवीन गृह में संपूर्ण रामायण जी का पाठ करने की इच्छा मम्मी के हृदय में जागृत हुई किंतु डैडी के परिवार में दैनिक अग्निहोत्र तथा आर्य समाजी प्रणाली का चलन था। अतः बड़े संकोच के साथ मम्मी ने हमारे बाबा जी के समक्ष अपनी इच्छा व्यक्त करी, जिसको सुनकर वे अत्यन्त हर्षित हुये और स्वयं बाज़ार से पूजा की सामग्री लाये व भगवान के चित्र भी लाये। आर्य समाज में अवतारवाद को नहीं माना जाता था, इस कारण घर में भगवान के कोई चित्र न थे। उन चित्रों में से एक चित्र आज भी मम्मी के पूजा गृह में सुशोभित है। उस रामायण पाठ में बाबा जी ने स्वयं अपने पठन का समय १२ से ४ बजे प्रातः का निश्चित किया। संभवत: यह सोचकर कि वह समय जगने व पाठ करने के लिए सबसे कठिन होता है, तथा पूर्ण उत्साह के साथ पाठ में सहयोग दिया। बाबा जी की उस उदारता का मम्मी सदैव वर्णन करती थीं। इस पाठ के उपरांत मम्मी ने अपनी प्रणाली की पूजा भी आरंभ कर दी। आर्य समाजी कृत्यों, जैसे हवन आदि का तो वे आदर भी करती थी व प्रतिदिन उसमें सहयोग भी देती थीं। जीवन पर्यंत वे यह सुनिश्चित करती थीं कि डैडी का दैनिक अग्निहोत्र होता रहे। डैडी कार्य वश जब दौरे आदि पर बाहर जाते थे तो हवन में प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुओं को सुचारू रूप से बांधकर देती थीं जिससे डैडी अपना हवन का कृत्य संपन्न कर सकें।

पातिव्रत धर्म की शिक्षा मम्मी को अपनी माताजी से तो मिली ही थी किंतु उनका एक जन्मजात संस्कार भी था। डैडी के प्रति उनका समर्पण देखते ही बनता था। डैडी की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं करती थी, न हीं उनके ऊपर उसका कोई बोझ ही पड़ता था। डैडी की प्रसन्नता के अनुकूल चलना उनके लिए सहज स्वभाविक था। डैडी की प्रत्येक सुख, सुविधा व रुचि का विचार रखती थीं। संगीत में उनकी कोई विशेष रुचि न थी परंतु डैडी की रुचि एवं प्रतिभा को वे बड़ा आदर देतीं थीं तथा प्रोत्साहन भी देती थी। अधिकतर गृह में एक कक्ष संगीत की गतिविधियों के लिए आरक्षित रहता था जिसमें सभी वाद्य सजे सजाए रखे रहते थे। कोई एक वाद्य दिन में डैडी अवश्य बजाते थे अथवा हारमोनियम पर गायन करते थे, जिससे घर के वातावरण में मिठास भरी सरसता छाई रहती थी। मम्मी का यह नियम था कि भोजन वे डैडी के साथ ही करती थी चाहे कार्यवश डैडी को कितना भी विलंब क्यों न हो जाये। डैडी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखती थी एवं ग्रह दशा शांति के लिए मंत्र अनुष्ठान भी करती थी। किसी भी प्रकार की प्रतिकूलता में उनका एकमात्र सहारा

होता था रामायण जी का पाठ। पातिव्रत धर्म पालन के लिए वे पार्वती जी की आराधना विशेष रूप से करती थीं। उपासना के इन सभी क्षेत्रों में संत दर्शन के उपरांत बहुत परिवर्तन आया जब यह तथ्य हृदयंगम हुआ कि आराधना केवल भगवान के चरणों में अनुराग प्राप्त करने के लिए ही होनी चाहिए।

मैं तुमको श्याम बुलाऊँ, सादर घरमें पधराऊँ ।
नयनोंसे स्वागत गाऊँ सरबस दे तुम्हें रिझाऊँ ॥
अँखियन-जल पैर धुलाऊँ, हिय-झूले तुम्हें झुलाऊँ ।
प्रेमामृत-रस नहलाऊँ भोजन रस-मधुर कराऊँ ।।
हिय कोमल सेज सुलाऊँ, सुरभित अति पवन डुलाऊँ ।
कोमल कर चरण दबाऊँ, छबि निरख-निरख सुख पाऊँ ।।
छन-छन मन मोद बढ़ाऊँ, नाचूँ गाऊँ हरषाऊँ ।
नख-सिखपर बलि-बलि जाऊँ, मैं न्योछावर हो जाऊँ ॥

डैडी के प्रेमिल स्वभाव तथा प्रशासनिक सेवा के सदस्य होने के कारण घर पर लोगों का आना-जाना लगा रहता था। डैडी की मित्र मंडली भी बड़ी थी एवं संबंधियों से भी अत्यंत सौहार्द का संबंध था। अपने अतिथि सेवा के दायित्व को मम्मी बड़े मनोयोग से निभाती थीं। सबकी रुचि का भोजन बने इसका वे विशेष ध्यान रखती थीं। पकवान एवं व्यंजन बनाने में स्वयं भी निपुण थी व रसोई में सेवा देने वालों को भी निपुण बना लेती थीं। कक्ष की साज-सज्जा अतिथि के अनुकूल रहे इसका भी विचार करती थीं। अपने अंतःकरण की सरलता एवं सौहार्द के कारण वे सब के साथ घुल मिल जाती थीं, जिसके कारण जो एक बार घर में आता था परिवार का सदस्य बन जाता था।

अब आप विराजें, कृपा करें सेवा सब बतला दें, प्रियतम!
मैं स्वयं करूँगी पल-पलमें उत्साह नवीन लिये, प्रियतम!
यह भी कुछ कर देगी फिर जो भूलें होंगी हमसे, प्रियतम!
उनको तो क्षमा करेंगे ही, विश्वास सत्य यह है, प्रियतम।।४५१।।

हम दोनों बेटियों से उनका अगाध वात्सल्य था। शैशव, बाल्यकाल तथा किशोरावस्था में कैसी सहायता एवं सुझाव हमको देने चाहिए इसका बड़ा विचार करती थीं। उनका ममत्व, मैत्रीपूर्ण था जिसके फलस्वरुप हम दोनों उनसे अपने मन की बात कह लेते थे। हमारा लालन-पालन कितने चाव से उन्होंने किया उसका विचार करके आज भी आँखें भर आती हैं। वे अनुशासन व मर्यादा प्रिय भी बहुत थीं अत: घर के नियमों का

हम पालन करें इसमें कोई ढिलाई नहीं आने देती थीं। आवश्यकता पड़ने पर अच्छी खासी डाँट भी लगा देती थीं। मम्मी-डैडी के जीवन में परस्पर विवाद का एक ही विषय था, कि जब हम दोनों को अनुशासित करने में मम्मी की वाणी का स्वर उच्च हो जाता था। इस पर डैडी का उनसे विनम्र सुझाव रहता था कि बच्चों का हृदय कोमल होता है अत: उन्हें प्रेम से समझाना चाहिये तथा डाँट-फटकार कर नहीं समझाना चाहिये क्योंकि उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। किन्तु मम्मी की सोच भिन्न थी कि अनुशासित करने में थोड़ा क्रोध से काम भी लेना पड़ता है, अन्यथा बच्चे बिगड़ जाते हैं। अंत में विजय डैडी की ही होती थी और हम दोनों बहनें राहत की साँस लेते थे। हम दोनों बेटियों के जीवन में अध्यात्म का प्रवेश हो इसमें डैडी का बहुत योगदान रहा किंतु मम्मी ने भी अपने स्तर पर हमको बहुत प्रोत्साहित किया। हमारे दैनिक स्वाध्याय एवं जप पर अपनी पैनी दृष्टि रखती थीं। किंतु टोकती नहीं थी, जिससे हम जप एवं स्वाध्याय के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझें। हम अस्वस्थ हो जाते थे तो रात-दिन हमारी देखभाल करती थीं।

आँगन स्याम नचावहीं, जसुमति नँदरानी।
तारी दै-दै गावहीं मधुरी मृदु बानी।
पाइनि नूपुर बाजई, कटि किंकिनि कूजै।
नान्हीं एड़ियनि अरुनता, फल-बिंब नपूजै।
जसुमति गान सुनै स्रवन, तब आपुन गावै।
तारी बजावत देखई, पुनि आपु बजावै।
केहरि-नख उर पर रुरै, सुठि सोभाकारी।
मनौ स्याम घन मध्य में, नव ससि-उजियारी।
गभुआरे सिर केस हैं, बर घूँघरवारे।
लटकन लटकत भाल पर, बिधु मधि गन तारे।
कठुला कंठ चिबुक-तरैं, मुख दसन बिराजैं।
खंजन बिच सुक आनि कै मनु परयौ दुराजैं।
जसुमति सुतहि नचावई, छबि देखति जिय तैं।
सूरदास प्रभु स्याम कौ, मुख टरत न हिय तैं।।

उनके जीवन में एक स्वाभाविक अनुशासन व मर्यादा पालन का ताना-बाना बुना हुआ था। अत: स्वयं भी इसका पालन करती थीं तथा अपने से छोटों को भी इसके विषय में कहने के लिए संकोच नहीं करती थीं। ऐसे समय में यदा-कदा उनकी

वाणी का स्वर उच्च हो जाता था, तब डैडी उनको सचेत भी करते थे। डैडी की सीख को वे बहुत महत्व देती थीं। 28 वर्ष की आयु में उन्हें टिटनेस का भयंकर प्रकोप सहना पड़ा था, जिसमें उनके जीवन की आशा भी जाती रही थी, किंतु हमारे नानाजी के प्रयासों से मम्मी स्वस्थ तो हो गईं परंतु जीवन भर उसके दुष्प्रभाव सहने पड़े। यह रोग नसों को बहुत शिथिल बना देता है, जिसके कारण उनको यदा-कदा एक घबराहट सी हो जाती थी। संभवत: इस कारण उनका स्वर उच्च हो जाता था। डैडी की मित्र मण्डली भी विशाल थी जिसमें अधिकतर लोग आयु में डैडी से छोटे थे और मम्मी व डैडी का बहुत आदर भी करते थे। अनुचित व्यवहार को देखकर मम्मी कहने में संकोच नहीं करती थी। यह वे अपनेपन की भावना से प्रेरित होकर ही करती थी तथा सब इस बात के लिए उनका बहुत आदर भी करते थे। शायद ही कभी ऐसा हुआ होगा कि किसी ने बुरा माना हो अन्यथा सब मम्मी के स्नेह से ही प्रभावित रहते थे व उनके सुझावों को जीवन में उतारने के लिए प्रयास करते थे। इस कारण कितने ही परिवारों के मध्य आपसी मतभेद शांत हुये।

नीरव थे सभी, चित्त पर अब हो रहा प्रफुल्लित था, प्रियतम!
उन पर्णकुटीरवासिनीकी इस समय उपस्थिति से, प्रियतम!
सबका अनुभव यह था, सबकी रुचि ये रख देती हैं, प्रियतम!
सर्वथा असंभवको भी ये संभव कर देती हैं, प्रियतम।।५६४।।

घर का वातावरण प्रसन्नता व उत्साह से व्याप्त रहे इसके लिए वह बहुत प्रयास करती थीं। इसमें डैडी का भी बहुत सहयोग रहता था। दिनचर्या चाहे कितनी भी व्यस्त हो किंतु हम पुत्रीयों के साथ कुछ समय वे दोनों अवश्य व्यतीत करते थे। भोजन के समय पूरा परिवार साथ बैठे यह उनको बहुत रुचिकर था। हम दोनों की दिनभर की गतिविधियों के विषय में बात करना तथा डैडी के रोचक किस्सों से भोजन का समय सभी के लिए सुखकर होता था। वृद्धावस्था आने पर हमारी दादी कई वर्ष हम लोगों के साथ रहीं। भोजन के लिए चाहे डैडी को विलंब क्यों ना हो परंतु भोजन में उपस्थित रहना उनको भी बहुत प्रिय था। घर के वातावरण को संगीत बहुत सरस बना देता था। रविवार अथवा अवकाश के दिन घर के सदस्यों की संगीत गोष्ठी अवश्य होती थी। हम सब मिलकर प्रारंभ में तो फिल्मी गानों व गजलों का गायन करते थे किंतु संत दर्शन के पश्चात् भजनों का गायन व वादन होता था। इन पारिवारिक संगीत गोष्ठियों में मम्मी तबला बजाती थीं, डैडी हारमोनियम अथवा इलेक्ट्रिक गिटार बजाते थे, बड़ी बहन पियानो अथवा तबला बजतीं तथा मैं गाती अथवा मेन्डोलिन बजाती थी। उस समय के आनंद का वर्णन करना शब्दों में संभव नहीं है। डैडी के मित्रों

एवं पारिवारिक संबंधियों के परिवारों का भी बहुत आना-जाना होता था। संगीत की इन गोष्ठियों में उनका भी सहयोग रहता था। इन संगीत की गतिविधियों के मध्य मम्मी विभिन्न प्रकार के व्यंजनों से सबको संतुष्ट रखती थीं तथा सबकी रुचि का भी ध्यान रखती थीं। यह उनके व्यक्तित्व की परम रसमई बात थी। देश के विख्यात संगीतज्ञ, शायर, कवियों का सत्कार मम्मी बड़े मनोयोज्ञ से करती थीं। जिसके कारण उन सब के मनों पर मम्मी के अतिथि सत्कार की अमिट छाप पड़ जाती थी।

किसी पर्व अथवा उत्सव में मम्मी का उत्साह देखते बनता था। उनकी यह मान्यता थी कि प्रत्येक पर्व को हर्षोल्लास से मनाना चाहिये और इसको वे अपने जीवन में बड़ी दृढ़ता से उतारा करती थीं। उत्सव घर में होते रहें इसका उनके मन में बड़ा चाव था। हमारी भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि वर्ष भर उत्सव व पर्व होते ही रहते हैं। इस कारण जीवन भी उत्सवमय बना रहता है। होली, दीपावली आदि बड़े पर्वों पर तो घर में बहुत रौनक बनी ही रहती थी किन्तु छोटे-छोटे त्यौहारों को भी वे बहुत महत्व देती थीं तथा जीवन के प्रत्येक पक्ष में उनका वो उल्लास झलकता था। उत्सव में गृह सज्जा कैसी होगी या भोजन में क्या विशेषता होगी तथा सब परिवार जन की वेशभूषा क्या रहेगी, इस सब का वो बहुत विचार करती थीं। इस कारण प्राची के द्वार पर सूर्य देव कभी सूनापन लिये हुये नहीं उदय होते थे अपितु कुछ नवीनता लिये हुये ही उदय होते थे। घर में सदैव प्रसन्नता व प्रफुल्लता छाई रहती थी।

राधिका आज आनंद में डोलै ।
साँवरे चंद गोबिंद के रस भरी दूसरी कोकिला मधुर स्वर बोलै ।।
पहिर तन नील पट कनक हारावली हाथ लै आरसी रूप को तोलै ।
कहत श्रीभट्ट ब्रजनारि नागरि बनी कृष्ण के सील की ग्रंथिका खोलै ।।

अत्यंत सौहार्द व प्रेम के वातावरण में मम्मी ने अपने गृहस्थ की नींव डाली थी। प्रारंभ में गृहस्थ आश्रम धर्म की जानकारी संभवत: उन्हें नहीं होगी, किंतु किसी अचिंत्य प्रेरणा से उनके गृहस्थ ने गृहस्थ आश्रम की रूपरेखा धारण कर ली थी। गृहस्थ धर्म के पालन द्वारा दो व्यक्ति एक बन कर अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं तथा अपने लक्ष्य की ओर सुगमता से अग्रसर हो पाते हैं। मम्मी-डैडी के जीवन से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था। उनके गृहस्थ की एक अनोखी झलक यह थी कि मम्मी के मन में डैडी के प्रति प्रेम, आदर व समर्पण का भाव था तथा डैडी के मन में उनके प्रति प्रेम व पूर्ण निर्भरता का भाव था। यद्यपि स्वभाव एवं रुचि के स्तर पर दोनों में भिन्नता थी किंतु उन दोनों ने उन भिन्नताओं को एक दूसरे को प्रसन्न करने व सुख देने में प्रयोग किया न कि अपनी-अपनी बातों पर अड़ जाने के

लिए। डैडी की संगीत में केवल रुचि ही नहीं थी वे एक संगीतज्ञ भी थे। जबकि मम्मी को स्वर एवं रागों का कोई ज्ञान नहीं था, किंतु डैडी की इस रुचि का मम्मी बहुत आदर भी करती थी तथा उनको प्रोत्साहित भी करती थीं। इस कारण कुछ ही वर्षों में उनको यह ज्ञान उदित हो गया था कि कब स्वर ठीक लगा है और कब उसमें विकृति आ गई है। इसके फल स्वरूप हमारी स्वर त्रुटियों को सुधारने में सहायक भी हो जाती थीं। वस्त्रों, पाकशाला, गृह शोभा एवं गृह संचालन में डैडी की कोई रुचि नहीं थी, किंतु मम्मी को इन क्षेत्रों में पूर्ण सहयोग भी देते थे। इस प्रकार सौहार्द एवं सहयोग उनके गृहस्थ आश्रम के आधार थे तथा वे दोनों एक दूसरे के सदैव पूरक भी बन रहे।

ऐसी थी प्रीति परस्पर जो, वे एक दूसरीके, प्रियतम!
सुखके निमित्त मर मिटनेको प्रस्तुत हरदम रहतीं, प्रियतम!
सबके ही प्राण सभीमें सच रहते थे स्यूत हुए, प्रियतम!
अन्यत्र न था वह सखीपना, है नहीं, न होगा ही, प्रियतम।।२०१।।

मार्च १९६७ में मम्मी-डैडी को परम पूज्य बाबूजी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं परम पूज्य श्री राधा बाबा के दर्शन लाभ प्राप्त हुये। यह उन दोनों के जीवन की अनूठी उपलब्धी थी। उसी वर्ष अक्टूबर माह में कुछ ऐसा संयोग बना कि रेहाना माँ के भी प्रथम दर्शन प्राप्त हुए। इन तीनों संतों के सानिध्य से जीवन को एक नवीन प्रेममयी दिशा प्राप्त हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि अब तक का जीवन इसी परम उपलब्धि की तैयारी मात्र था। अभीष्ट हवाओं के झोंकों ने जीवन नैया को एक परम सुखद गंतव्य की ओर अग्रसर किया। रेहाना माँ ने एक स्नेहमई जननी के रुप में, इस नवीन पथ पर मम्मी-डैडी के पग स्थिर कराये, तो बाबा-बाबूजी ने उन पगों को उत्साह व त्वरा से परिपूर्ण किया। परस्पर के सौहार्द के कारण मम्मी-डैडी ने इस बदलाव को अत्यंत प्रेम वह उत्साह के साथ स्वीकार किया तथा एक दूसरे के सहायक बनकर तीव्र गति से अपनी-अपनी पगडंडियों पर अग्रसर हुए। मम्मी ने अपने नाम जप, स्वाध्याय, भाव व सेवा द्वारा जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया तथा डैडी ने गीतोक्त जीवन प्रणाली को अपनाकर जीवन के प्रत्येक स्तर पर अपने कर्तव्य का निर्वाह करके अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया। यह परस्पर में भिन्न दिखने वाली दो धाराएं वास्तव में भिन्न नहीं थी एक ही थीं। नाम जप, स्वाध्याय, सत्संग, पद गायन व कीर्तन दोनों के जीवन में सम्मिलित थे। दोनों की कुछ साधना के अंग एकांत में संपन्न होते थे व कुछ सम्मिलित रुप से संपन्न होते थे, जिसमें थे दैनिक अग्निहोत्र, पद गायन व कीर्तन तथा कुछ स्वाध्याय।

हम दोनों अभी इसी क्षणसे हो चुके समर्पित हैं, प्रियतम!
जो कृपामयी त्रिभुवनजननी हैं, उनके श्रीपदमें, प्रियतम!
किंकरी और किंकर हम हैं दोनों विक्रीत हुए, प्रिययतम!
केवल उनकी ही सेवा अब जीवन पर्यन्त करें, प्रियतम।।२३।।

मई १९८० में जब डैडी संस्थागत वित्तीय विभाग के सचिव थे तब उनकी सेवा निवृत्ति हुई। मम्मी डैडी अब अपने निवास १७१ ए आबू लेन, मेरठ, में स्थाई रूप से रहने लगे। कई वर्षों का श्रीमद्भगवद्गीता, श्री रामचरितमानस तथा अन्यान्य ग्रंथों का अध्ययन अब और गंभीरता से होने लगा। प्रात: पद-गायन व कीर्तन का कार्यक्रम अब और भी रसमय हो गया था। गृह कार्यों के निर्वाह के समय के अतिरिक्त सब समय भगवद् संबंधी कृत्यों से ही दिनचर्या परिपूर्ण रहती। मित्र अथवा पारिवारिक संबंधी जो भी आते, उनके सत्कार के उपरांत ग्रंथों का पठन अथवा सद् चर्चा ही होती। मम्मी-डैडी दोनों ही इस बात का बहुत विचार करते थे कि घर में निम्न स्तर की कोई चर्चा न हो। अधिकांशत: घर में चर्चा सद्व्यवहार को पोषित करने वाली होती थी अथवा हँसने हँसाने वाली होती थी। निन्दा, दोष दर्शन इत्यादि का तो प्रश्न ही नहीं होता था। संत दर्शन उपरान्त चर्चा का विषय संतवाणी अथवा सद् ग्रन्थों से सम्बन्धित ही होता था। यह बदलाव एक दिन में नहीं आया। वे दोनों सांसारिक चर्चा को उतना ही महत्व देते थे जो गृह संचालन या कर्तव्य पालन के लिये आवश्यक होता था। अतिथि सत्कार में भी यही प्रणाली लागू होती थी और डैडी का यह प्रयास होता था कि सद् ग्रन्थ चर्चा में रोचकता भी बनी रहे जिससे सुनने वाले का मन उबे नहीं। इसके फलस्वरूप अनेक गोष्ठियों के माध्यम से कई परिवार उनसे जुड़ते चले गये। जीवन के प्रत्येक पल का सदुपयोग एक निर्धन के धन की भाँति होने लगा। डैडी-मम्मी दोनों ही प्रतिदिन एक लाख षोडशाक्षर मंत्र के जप का अनुष्ठान किया करते थे। गृह कार्य व अतिथि सेवा के उपरांत मम्मी का अधिकांश समय ठाकुर सेवा, व्यक्तिगत स्वाध्याय तथा चिंतन में व्यतीत होता। उनका नियम था संध्या ४ बजे वे अपने मंदिर के एकांत में बैठकर गहन चिंतन में तल्लीत हो जाती थीं। उनका चिंतन इतना प्रगाढ़ व भावपूर्ण होता था कि परम पूज्य राधा बाबा स्वयं उसका सम्मान करते थे। गीता वाटिका के रसमय वातावरण में जब कभी किसी वृक्ष के नीचे मम्मी ध्यान में मग्न हो जाती तो बाबा किसी महिला को पंखा झलने के लिए नियुक्त कर देते, जिससे मम्मी के चिंतन में मच्छर व मक्खी से विघ्न न पड़े। चिंतन की जिन ऊँचाइयों पर मम्मी पहुंची इसकी आधारशिला थी उनका मर्यादा पालन, पातिव्रत धर्म पालन एवम् गृहस्थाश्रम धर्म पालन। डैडी के साथ बैठकर भगवत चर्चा व ग्रंथों

का पठन तो उनकी साधना का अनिवार्य अंग था। शनैः-शनैः कुछ उत्सुक सदस्य इस भागवद् चर्चा में सम्मिलित होने लगे और इन्हीं सभाओं ने भविष्य में गोष्ठियों का रूप धारण किया।

जित देखौं तित स्याममई है।
स्याम कुंज बन जमुना स्यामा, स्याम गगन घनघटा छई है।।
सब रंगन में स्याम भर्यो है, लोग कहें यह बात नई है।
कैं बौरी, लोगन ही की स्याम पुतरिया बदल गई है।।
चंद्रसार रबिसार स्याम हैं, मृगमद स्याम काम विजई है।
नीलकंठको कंठ स्याम है, मनौ स्यामता-बेलि बई है।।
श्रुति को अच्छर स्याम देखियत, दीप सिखा पर स्यामतई है।
नर देवनकी कौन कथा कहै, अलख ब्रह्म छबि स्याममई है।।

सन १९८८ में मम्मी कैंसर रोग से आक्रांत हुई। डॉक्टरों की सलाह पर उनका एक ऑपरेशन किया गया जिसके उपरांत कुछ महीने बिल्कुल स्वस्थ रहीं। विधि का विधान कुछ और ही था अतः कैंसर के परमाणु उनके शरीर में फिर फैलने लगे। इस अवधि में मम्मी बड़ी लगन से अपनी भक्तिमयी दिनचर्या के अनुसार चलती रहीं। मार्च १९८९ में कैंसर ने भीषण रूप धारण कर लिया तथा डॉक्टरों ने डैडी को सचेत कर दिया कि उनका जीवन मई १९८९ तक ही रहेगा। भीषण वेदना के मध्य भी वे अपना दैनिक नियम किसी प्रकार करती रहीं। रात्रि में वेदना अधिक बढ़ जाती थी, किंतु वे पूर्ण लगन के साथ बड़े धैर्य से जप करती रहती थी अथवा डैडी उनको हारमोनियम पर कीर्तन मंद स्वर में सुनाते रहते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि कीर्तन की मधुर लहरियों से उनकी वेदना में कुछ कमी होती थी किंतु फिर वेदना का बांध टूट जाता था। इस प्रकार १७ मई सन् १९८९ के दिवस उनको नर्सिंग होम में ले जाया गया। तब तक कई परिवार डैडी की गोष्ठियों में जुड़ गए थे और सब के सहयोग से दो व्यक्ति मम्मी के कक्ष में नाम जप करते रहते थे। यह सिलसिला रात और दिन चलता था। सब ने अपना-अपना समय निर्धारित कर लिया था। नर्सिंग होम के उस कक्ष का वातावरण ऐसा हो गया था मानो कोई यज्ञ चल रहा हो। मम्मी अपने पलंग पर निढाल पड़ी रहती थी। नर्सिंग होम की सेविकाओं का मम्मी के प्रति न जाने कैसा अपनेपन का भाव उत्पन्न हो गया था कि वे सब बड़ी ही कोमलता व सौहार्द के साथ उनकी सेवा करती थीं जिसको देख हम सब अचरज में पड़ जाते थे। संभवतः २५ मई की संध्या में जब सूर्य देव अस्ताचल को जा चुके थे और मम्मी के कक्ष में हम चार व्यक्ति शांतिपूर्वक जप कर रहे थे, तब

वे अचानक उठी और अपना हस्त उस चित्रपट की ओर उठाकर, जिसकी आराधना उन्होंने कई वर्ष की थी, जोर से बोली - "देखो, देखो! वो आ गये मेरे कृष्ण! देखो! देखो!!"

अचम्भे की बात यह थी कि जिसमें एक उंगली उठाने की भी शक्ति नहीं थी वे कैसे अपने आप उठ बैठीं और इतने तीव्र स्वर में पुकार उठीं। इसके अगले क्षण ही वे निढाल अपने पलंग पर पुनः गिर गई और उसके पश्चात उनका किसी से कोई संपर्क ना रहा। 28 मई सन् 1989 के दिवस वे इस धरा धाम से विदा हो गईं। उस अपार दु:ख को सहने की शक्ति परम पूज्य बाबा के उस वाक्य ने दी जो फोन द्वारा उन्होंने डैडी को पूज्या बाई (परम पूज्य श्री बाबूजी की पुत्री) के माध्यम से कहलवाई थी की मम्मी अपने प्राण धन श्री भगवान कृष्ण के चरणों में आश्रय पा गई हैं।

स्याम रूप में तेज अधर रस जलहिँ मिलाऊँ ।
मुरलि अकास मिलाय प्रान में प्राननि छाऊँ ।।
मुख मंडित गोधूलि अली टुक देख न पाऊँ ।
पृथ्वी अंस मिलाय तासु मैं प्रियतम ध्याऊँ ।।

जीवन संगिनी के विदा होने के उपरांत डैडी ने एक वर्ष में अपने लेखन के प्रथम पुष्प "श्रीमद् भगवद् गीता : जीवन विज्ञान" नामक पुस्तक उनकी स्मृति में श्री भगवान के चरणों में समर्पित करके अपनी श्रद्धांजलि मम्मी को समर्पित करी।

- राधा राधा राधा राधा -